उमा पाठक
संस्कृत - विभाग
बी॰ - बी॰ए॰ III

छन्द-एक परिचय -

प्रथम छन्द शास्त्रकार पिङ्गलाचार्य के नाम पर इस शास्त्र को पिङ्गलशास्त्र कहते हैं। इनका ग्रंथ 'छन्दसूत्र' है। इसमें आठ अध्याय हैं एवं सम्पूर्ण सूत्रों की संख्या 308 है। इसके 97 सूत्र यानि आरंभ के तीन अध्याय तथा चतुर्थ अध्याय के सप्तसूत्र तक वैदिक छन्दों की चर्चा है। शेष चतुर्थ अध्याय मात्रावृत्तों का है, अन्तिम तीन अध्याय वर्णवृत्त के सम, अर्धसम और विषम त्रिविध छन्दों का वर्णन करते हैं। इन्हें पानिनि का अनुज भी कहा गया है।

छन्दों की उचित व्याख्या के लिए गणों तथा युक्ति को निर्माण किया गया - गण तीन वर्णों का होता है, गुरु (ऽ), लघु (।) के निश्चित क्रम से गणों का निर्माण होता है। इसे बनाने की सबसे आसान सूत्रविधि है - यमाताराजभानसलगाः। इनमें वर्ण के अनुसार गण का नामकरण है एवं ~~वर्ण अ~~ गणवर्ण अपने बाद के दो वर्णों की मात्रा को मिलाकर तैयार होता है।

यथा - यगण - ।ऽऽ
मगण - ऽऽऽ
तगण - ऽऽ।
रगण - ऽ।ऽ
जगण - ।ऽ।
भगण - ऽ।।
नगण - ।।।
सगण - ।।ऽ
लघु - ।
गुरु - ऽ

कुछ छन्दों में मात्राओं की गणना होती है, यथा गुरु एवं लघु का बन्धन वहाँ भी रहता है।

छन्दों में चार चरणों का होना अनिवार्य है, जो सम, विषम या अर्धसम हो सकते हैं। अधिकांश छन्द समवृत्त वाले ही होते हैं। संस्कृत - काव्यों में मुख्य रूप से अनुष्टुप् (श्लोक)

Scanned with CamScanner

वंशस्थ, उपजाति, मन्दाक्रान्ता, द्रुतविलम्बित, शालिनी, वसंततिलका, मालिनी, हारिणी, शिखरिणी, शार्दूल-विक्रीडित, स्रग्धरा तथा आर्या छन्द हैं। इनमें आर्या छन्द में मात्राओं की गणना होती है, यद्यपि गुरु, लघु और गण का बन्धन वहाँ भी रहता है।

इनमें 'अनुष्टुप्' सबसे छोटा (8×4) एवं 'स्रग्धरा' सबसे बड़ा (21×4) छन्द है।

पिङ्गल की पाटलिपुत्र में परीक्षा होने की जनश्रुति राजशेखर ने उद्धृत की है। इस ग्रन्थ पर 10वीं शताब्दी में हलायुध ने 'मृतसञ्जीवनी' नामक टीका लिखी थी।

अग्निपुराण के आठ अध्यायों में भी छन्दों का विवरण प्राप्त होता है। जयदेव रचित 'जयदेवच्छन्दः' तथा जयकीर्ति रचित 'छन्दोऽनुशासन' में भी आठ-आठ अध्याय ही प्राप्त होते हैं।

मध्यकाल के ग्रंथों में केदारभट्ट कृत 'वृत्तरत्नाकर' बहुत लोकप्रिय है और सम्प्रति पाठ्यक्रम में निर्धारित है। इसमें छः अध्याय हैं, जिसके अन्तिम अध्याय में गणित-विषय प्रस्तार, नष्ट, उद्दिष्ट आदि विषयों का वर्णन है। इसकी विशिष्टता यह है कि इसमें छन्द के लक्षण और उदाहरण एक ही पंक्ति में हैं। यथा —

'रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी' —

यह शिखरिणी के एक चरण का उदाहरण भी है एवं यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, लघु और गुरु इसके लक्षण हैं तथा रसै — छः, रुद्र — ग्यारह अर्थात् छठे एवं ग्यारहवें अक्षर पर यति होती है — यह वर्णित है। यह बहुत लोक-विख्यात एवं सहज वर्णन माना जाता है।